

सनातन धर्म 19वीं शताब्दी के हरियाणा में सामाजिक-धार्मिक सुधार, जनसंचार माध्यमों की प्रतिक्रियाएँ और क्षेत्रीय समाज एवं राजनीतिक व्यवस्था पर उनका प्रभाव

मन मोहन शर्मा
पीएच.डी. शोधार्थी,
इतिहास विभाग
ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी,
हिसार
ईमेल: mohan.vats2012@gmail.com

शोध मार्गदर्शक:
डॉ. कृष्ण कुमार
सहायक प्रोफेसर एवं शोध मार्गदर्शक
इतिहास विभाग
ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी,
हिसार

सारांश:

उन्नीसवीं सदी के आर्य समाज और सनातन धर्म सभा आंदोलनों और प्रेस व जनसंचार माध्यमों में उनके चित्रण पर केंद्रित, यह अध्ययन हरियाणा के सामाजिक-राजनीतिक इतिहास की पड़ताल के लिए नृवंशविज्ञान संबंधी अंतर्दृष्टि के साथ तुलनात्मक गुणात्मक विषयवस्तु विश्लेषण का उपयोग करता है। यह द्वितीयक ऐतिहासिक स्रोतों का उपयोग करके उन तरीकों की जाँच करता है जिनसे इन आंदोलनों ने पंजाब, हरियाणा और भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों की राजनीति, संस्कृति और पहचान को प्रभावित किया। परिणाम दर्शाते हैं कि धर्म के बारे में मीडिया का चित्रण ऐतिहासिक रूप से सटीक था, जो धर्म के राजनीतिकरण, हिंदू पहचान के सुदृढ़ीकरण और 1966 के पंजाब-हरियाणा विभाजन जैसे भाषाई और धार्मिक विभाजनों के निर्माण में उनकी भूमिका को उजागर करता है। यह अध्ययन हरियाणा के वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक माहौल पर इन क्रांतियों के स्थायी प्रभाव पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द: 19वीं सदी का क्षेत्रीय प्रेस, हरियाणा सनातन धर्म, आर्य समाज हरियाणा, दीन दयालु, श्रद्धा राम, रूढ़िवादी हिंदू धर्म, पंजाब-हरियाणा विभाजन, हिंदू विरासत हरियाणा

परिचय

हरियाणा राज्य को प्राचीन भारतीय संस्कृति का उद्गम स्थल माना जाता है क्योंकि इसका इतिहास पूर्व-वैदिक काल (लगभग 4000 ईसा पूर्व) से शुरू होता है, हड़प्पा सभ्यता से इसका संबंध है, और कुरुक्षेत्र, पानीपत और पेहोवा जैसे प्राचीन स्थल भी हैं (स्वा.स. 1-10, 2020)। हरियाणा का सांस्कृतिक परिवेश ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म को बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सूफीवाद और सिख धर्म के साथ जोड़ता है। ऐतिहासिक रूप से, राज्य को एक अलग भौगोलिक या भाषाई इकाई (भारद्वाज) के बजाय एक उप-क्षेत्र माना जाता था। जिस समय इसके पवित्र स्थल और युद्धक्षेत्र फल-फूल रहे थे, उसी समय प्राकृत,

संस्कृत, फारसी, अरबी, हिंदी और उर्दू साहित्यिक परंपराओं का भी विस्तार हो रहा था।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1878–1883 में आर्य समाज की स्थापना की। यह एक ऐसा आंदोलन था जिसने तर्क तथा सामाजिक–धार्मिक आयोजनों, जैसे कि, शुद्धि और वैदिक प्रमाणों का सहारा लेकर पारंपरिक हिंदू धर्म पर प्रश्न उठाए। इस समूह का लाला लाजपत राय (सिंह 150–155, 2010) जैसी प्रमुख हस्तियों पर प्रभाव पड़ा। इसके जवाब में दीन दयाल शर्मा ने सनातन धर्म सभा की स्थापना की। यहाँ समाज सेवा, हिंदी–संस्कृत शिक्षा और परंपरावाद आचार धर्मों को प्रोत्साहित की गई (झज्जर, 1886)।

1868 से शुरू होकर, कविवचन सुधा और प्रांतीय पत्रिकाओं जैसे प्रकाशनों के माध्यम से, स्थानीय प्रेस ने इन आंदोलनों को बल प्रदान किया। उन्होंने सैद्धांतिक असहमतियों को दर्ज करने और हिंदू पुनरुत्थानवाद को बढ़ावा देने का काम किया, जिसने भारत के औपनिवेशिक काल में हरियाणा की धार्मिक–राजनीतिक पहचान के निर्माण में योगदान दिया। स्वतंत्रता–पूर्व प्रेस ने सुधारवादी कार्यवाहियों और वैचारिक संघर्षों का दस्तावेजीकरण किया, एक सामाजिक–राजनीतिक दर्पण और उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया, जिससे हरियाणा की विकासशील हिंदू पहचान के नृवंशविज्ञान संबंधी क्षेत्रीय इतिहास को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस संदर्भ में, इस शोध का उद्देश्य 19वीं सदी के हरियाणा में हिंदू–आधारित सामाजिक–धार्मिक सुधारों से जुड़े आख्यानों के परिणामस्वरूप क्षेत्रीय और राष्ट्रीय राजनीति और सामाजिक संरचनाओं पर समाचार और प्रेस मीडिया के महत्वपूर्ण प्रभावों की जाँच करना है। यह शोध नीति निर्माताओं को शामिल करने और हरियाणा की समकालीन क्षेत्रीय विरासत का निर्माण करने वाले सामाजिक–राजनीतिक और नृवंशविज्ञान संबंधी संदर्भ में सकारात्मक विकास या नई जटिलताओं को सुगम बनाने में प्रेस और समाचार मीडिया की भूमिका को प्रमाणित करने का प्रयास करता है।

अध्ययन को निम्नलिखित खंडों में व्यवस्थित किया गया है: संबंधित कार्य, उसके बाद समस्या कथन और प्रेरणा, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन प्रश्न, विश्लेषण के तरीके और उपकरण, और फिर साक्ष्यों की अनुसंधान, परिणाम की चर्चा। इस शोध के अंतिम खंड में निष्कर्ष और भविष्य के अध्ययन का दायरा शामिल है।

संबंधित कार्य

यह समीक्षा एक आलोचनात्मक कथात्मक पद्धति का प्रयोग करती है, जो यहाँ विश्लेषण किए गए शैक्षिक लेखों को दो क्षेत्रों में वर्गीकृत करती है: (1) ऐतिहासिक विरासत के अध्ययन में समाचार पत्रों की भूमिका, और (2) पंजाब, विशेषकर हरियाणा में सनातन धर्म के सामाजिक–धार्मिक सिद्धांतों का विकास, प्रसार और प्रभाव। ये वर्गीकरण 19वीं सदी के हरियाणा के समाज, राजनीति और रीति–रिवाजों पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव का मूल्यांकन करते हैं, जिससे उसकी सामाजिक–धार्मिक विरासत की व्याख्या करना आसान हो जाता है।

ऐतिहासिक विरासत आधारित अध्ययन में हरियाणा के क्षेत्रीय समाचार पत्र और पत्रकारिता प्रकाशनों की भूमिका (19वीं–20वीं शताब्दी के सनातन धर्म आधारित सामाजिक–धार्मिक सुधारों पर उनकी प्रतिक्रियाओं पर केंद्रित):

19वीं सदी के पंजाब और हरियाणा में, क्षेत्रीय समाचार पत्र सामाजिक-राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण वाहक बनकर उभरे। गोकुली और सिंह भाषाई और सांस्कृतिक रूप से विविध समुदायों में उनकी एकीकृत भूमिका पर जोर देते हैं, जबकि कौर और कौर (2025) द ट्रिब्यून और खालसा संवाद पत्र जैसे प्रकाशनों पर विचार करते हैं जिन्होंने न केवल औपनिवेशिक सत्ता का विरोध किया, बल्कि जातिवाद, लैंगिक असमानता और धार्मिक रूढ़िवाद का भी सामना किया। सिंह बताते हैं कि कैसे आर्य समाज और सिंह सभा ने धार्मिक व्याख्याओं को आधुनिक बनाने और जड़ जमाई परंपराओं को चुनौती देने के लिए प्रेस का राजनीतिक रूप से उपयोग किया, जिससे गहन सार्वजनिक बहस छिड़ गई।

मुमताज साक्षरता के लोकतंत्रीकरण और निम्नवर्गीय आवाजों को बुलंद करने के लिए हरिश्चंद्र जैसे हिंदी पत्रकारिता के अग्रदूतों को श्रेय देते हैं, जबकि यादव हरियाणा के समाचार पत्रों को स्वदेशी जातीय विशेषताओं और युद्धप्रिय लोक परंपराओं के संरक्षण से जोड़ते हैं। नेयाजी समकालीन आख्यानों पर देशी आधुनिकता के स्थायी प्रभाव को रेखांकित करते हैं, और प्रकाश देखते हैं कि कैसे औपनिवेशिक सेंसरशिप के बावजूद, प्रेस एक क्रांतिकारी शक्ति के रूप में पहचान को आकार देने, समुदायों को संगठित करने और आधुनिक राजनीतिक विमर्श को प्रभावित करने में कायम रहा।

हरियाणा के 19वीं सदी के हिंदू सामाजिक-धार्मिक सुधार, हिंदू राष्ट्रवाद के रूप में उनका विकास और मीडिया के रूप में संसाधन:

19वीं सदी के पंजाब और हरियाणा में, आर्य समाज और सनातन धर्म सभाओं द्वारा शुरू किए गए सामाजिक-धार्मिक सुधारों ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन, मिशनरियों के प्रभाव और सामाजिक-आर्थिक गतिरोध को संबोधित किया। गोल्ड इस काल को हिंदू धर्म के पुनरुत्थान के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं, जिसमें समकालीन शिक्षा और सामाजिक सुधार शामिल थे। आर्य समाज द्वारा मूर्तिपूजा और जातिगत कठोरता के खंडन ने आंतरिक पुनरुत्थान को गति दी, जबकि हरियाणा में, इसने महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया, अस्पृश्यता पर प्रहार किया और स्थानीय भाषा के स्कूलों (यादव) की स्थापना की। सिंह 1857 के बाद के दमन और पूर्वाग्रही कानूनों, जैसे 1900 के भूमि हस्तांतरण अधिनियम, का अवलोकन करते हैं, जिसने प्रभावित हिंदू समूहों को राष्ट्रवादी आंदोलनों में शामिल होने के लिए मजबूर किया। जाट गजट और ब्राह्मण समाचार जैसी सुधारवादी पत्रिकाओं ने इन अवधारणाओं का प्रसार किया।

दानसालिया और लाल बताते हैं कि पुनरुत्थानवादी जोश, औपनिवेशिक अधीनता और राजनीतिक लामबंदी ने सांप्रदायिक पहचान को मजबूत किया, जिससे कई बार अंतर्धार्मिक संघर्ष और भी बढ़ गए। चहल आर्य समाज की ग्रामीण भागीदारी, शिक्षा और नैतिक परिवर्तन को बढ़ावा देने पर जोर देते हैं। इन आंदोलनों ने धर्म, राजनीति और मीडिया को आपस में गुंथकर उत्तर भारत में समकालीन हिंदू पहचान और राष्ट्रवादी राजनीति की नींव रखी।

अनुसंधान अंतराल:

पंजाब और हरियाणा में 19वीं सदी के हिंदू सामाजिक-धार्मिक विकास और उनके सामाजिक-राजनीतिक एवं नृवंशविज्ञान संबंधी परिवेश के बीच महत्वपूर्ण संबंध पर अध्ययन का अभाव है। वर्तमान शोध सनातन धर्म सभा के महत्व की उपेक्षा करता है, सुधार और राष्ट्रवाद पर स्थानीय समाचार पत्रों के प्रभाव को कम करके आंकता है, और आर्य समाज पर ज्यादा जोर देता है, जिससे क्षेत्र के ऐतिहासिक संदर्भ में मीडिया, सुधार और पहचान के बीच अंतर्संबंध की समझ सीमित हो जाती है।

समस्या कथन और प्रेरणाएँ

यह अध्ययन हरियाणा के 19वीं सदी के सामाजिक-राजनीतिक इतिहास को नृवंशविज्ञान विश्लेषण के साथ जोड़ने वाले विश्लेषणात्मक शोध की कमी की जाँच करता है। यह विश्लेषण जनसंचार माध्यमों और पत्रकारिता साहित्य में आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के प्रतिनिधित्व की पड़ताल करता है और इसके सामाजिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभावों को स्पष्ट करता है। मीडिया, सुधार और पहचान को

एकीकृत करके, यह गहन विरासत-उन्मुख ऐतिहासिक अन्वेषण की नींव रखता है।

अनुसंधान के उद्देश्य

अपनी क्षमता और दायरे के भीतर अध्ययन का लक्ष्य निम्नलिखित अध्ययन उद्देश्यों को पूरा करना है:

1. आर्य समाज और सनातन धर्म सभा समूहों द्वारा शुरू किए गए सामाजिक-धार्मिक सुधारों के वास्तविक और जनसंचार माध्यमों द्वारा उत्पन्न जानकारी का तुलनात्मक निष्कर्षात्मक विश्लेषण करना।
2. वास्तविक सुधारों से उत्पन्न जातीय, सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों तथा 19वीं सदी के क्षेत्रीय समाचार पत्रों और पंजाब और हरियाणा के पत्रकारिता साहित्य के माध्यम से उनके प्रकटीकरण की व्याख्या करना।

अनुसंधान प्रश्न

इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित अध्ययन प्रश्नों का उत्तर देना है:

प्रश्न 1: क्या सामाजिक-धार्मिक सुधारों, अर्थात् आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के वास्तविक और मीडिया जनित खुलासों का तुलनात्मक दृष्टिकोण उनकी समकालीन प्रवृत्ति और विरासत को समझने में सहायता के लिए पर्याप्त, विशिष्ट और विश्वसनीय संसाधन प्रस्तुत करता है?

प्रश्न 2: दो सामाजिक-धार्मिक क्षेत्रीय सुधारों के बारे में जनसंचार माध्यमों पर आधारित जानकारी, उन वास्तविक ऐतिहासिक प्रभावों से किस प्रकार मेल खाती है या भिन्न है, जो प्रलेखित हैं और हरियाणा की क्षेत्रीय विरासत के एक भाग के रूप में अभी भी विद्यमान हैं?

विधियाँ और उपकरण

यह अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों और ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण का उपयोग करते हुए एक खोजपूर्ण और अनुमानात्मक गुणात्मक शोध के रूप में डिजाइन और विकसित किया गया है। विश्लेषण करने के लिए आवश्यक आँकड़े विभिन्न प्रकार की प्रतिष्ठित सामग्रियों से एकत्र किए गए हैं, जिनमें पिछले शैक्षणिक शोध, सरकारी अभिलेखागार, आधिकारिक रिकॉर्ड, प्रकाशित साक्षात्कार, ऐतिहासिक ग्रंथ और पत्रकारिता साहित्य शामिल हैं। आँकड़ों की गुणवत्ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए, सभी स्रोतों को सरकार द्वारा अनुमोदित पोर्टलों, प्रतिष्ठित समाचार संगठनों, विश्वसनीय ऐतिहासिक प्रकाशनों और समकक्ष-समीक्षित शैक्षणिक पत्रिकाओं से सावधानीपूर्वक चुना गया है। शोध के केंद्रीय विषय, यानी 19वीं सदी के हरियाणा के हिंदू सामाजिक-धार्मिक सुधारों पर क्षेत्रीय जनसंचार माध्यमों और पत्रकारिता साहित्य की प्रतिक्रियाएँ और क्षेत्रीय समाज और राजनीतिक व्यवस्था पर उनका प्रभाव के सभी प्रमुख पहलुओं को शामिल करने, उनका मिलान करने और उनका विश्लेषण करने के उद्देश्य से, तीन संसाधन घटकों को चुना गया है:

1. 19वीं सदी की ब्रिटिश राजनीतिक और सुधार पहल
2. 19वीं शताब्दी के हरियाणा में आर्य समाज और सनातन धर्म सभा की सामाजिक-धार्मिक सुधार पहल
3. जनसंचार ने 19वीं शताब्दी के हरियाणा में आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के सुधार पहलों पर रिकॉर्ड, लेख और पत्रकारिता संबंधी कार्य प्रकाशित किए

महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालने के लिए तुलना, प्रति-संदर्भ और आलोचनात्मक मूल्यांकन को शामिल करते हुए एक व्यवस्थित विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया जाता है। इन व्याख्याओं को ऐतिहासिक आँकड़ों और प्रलेखित संख्यात्मक अभिलेखों द्वारा और अधिक पुष्ट किया जाता है, जिससे प्रासंगिक होने पर निष्कर्षों के लिए मात्रात्मक समर्थन प्राप्त होता है। परिणामों को स्थापित शोध और आधिकारिक ऐतिहासिक दस्तावेजों से जोड़कर विश्लेषण की पुष्टि की जाती है, जिससे विकृतियों या गलत निष्कर्षों का खतरा कम हो जाता है।

यह अध्ययन अंततः अपने निष्कर्षों को हरियाणा के समकालीन सामाजिक-राजनीतिक और नृवंशविज्ञान संबंधी संदर्भ से जोड़ता है ताकि पिछले सुधारों की निरंतरता और महत्ता का मूल्यांकन किया जा सके। यह संरक्षण विरासत-उन्मुख अनुसंधान में अध्ययन के योगदान को सुदृढ़ करने और क्षेत्र के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक विकास पर भविष्य की जाँच-पड़ताल के लिए एक आधार स्थापित करने का प्रयास करता है।

साक्ष्यों की अनुसंधान और व्याख्या

इस शोध के मुख्य उद्देश्यों को प्रकट करने और पूरा करने के लिए प्रभावी माने जाने वाले तीन चुने हुए प्रभावशाली पहलुओं पर किए गए गुणात्मक सामग्री आधारित विश्लेषण के परिणामों के निष्कर्ष और चर्चा नीचे दी गई है:

19वीं सदी के भारत के हिंदू समाज को विनियमित करने के लिए ब्रिटिश पहल और नीतियाँ

19वीं सदी के भारत में, ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन ने मानव-धर्मशास्त्र (मनु के नियम) (लुबिन, 2016) जैसे धर्मग्रंथों को संहिताबद्ध करके हिंदू धर्म के कानूनी और सामाजिक ढांचे को बदल दिया, और उपनिवेशीकरण से पहले मौजूद विषम प्रणालियों का स्थान ले लिया। इस औपचारिकता ने हिंदू कानून को व्यक्तिगत मुद्दों तक सीमित कर दिया, ब्राह्मणवादी, पितृसत्तात्मक मानदंडों को मजबूत किया और निचली जातियों और महिलाओं को हाशिए पर धकेल दिया। सती प्रथा निषेध जैसे सामाजिक परिवर्तन अक्सर नैतिक साम्राज्यवाद के रूप में प्रकट हुए (बनर्जी और मजूमदार)। कानूनी और जनगणना अभिलेखों में समुदायों को वर्गीकृत करने से धार्मिक सीमाएँ और मजबूत हुईं, जिससे सांप्रदायिक तनाव बढ़ा (लुबिन, 2016)। इस विधि-व्यवस्था ने आर्य समाज और ब्रह्म समाज जैसे सुधारवादी आंदोलनों को गति दी, जिन्होंने धर्म, जाति और लिंग को राष्ट्रवादी राजनीति के साथ जोड़ दिया जिसके परिणामस्वरूप ऐसी संरचनात्मक विरासतें सामने आईं जो आधुनिक दक्षिण एशियाई सामाजिक-राजनीतिक पहचानों को प्रभावित करती हैं।

19वीं सदी के हरियाणा में सामाजिक-धार्मिक सुधारों की आर्य समाज और सनातन धर्म सभा की पहल

19वीं सदी के हरियाणा में, सामाजिक-धार्मिक विकास दो महत्वपूर्ण हिंदू आंदोलनों - आर्य समाज और सनातन धर्म सभा ने धार्मिक पहचान और सामाजिक-राजनीतिक जुड़ाव को आकार दिया। स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा 1875 में स्थापित आर्य समाज, 1878 में अंबाला और 1880 में रेवाड़ी की यात्राओं के माध्यम से पूरे हरियाणा में फैल गया, जिसके परिणामस्वरूप जगाधरी, अंबाला छावनी, करनाल, रोहतक और हिसार में इसकी शाखाएँ स्थापित हुईं। लाला लाजपत राय, पंडित बसंत राम और राव युधिष्ठिर जैसे नेताओं ने विधवा पुनर्विवाह, शुद्धि और शिक्षा जैसे बदलावों की वकालत की, जबकि भगत फूल सिंह जैसे जमीनी नेताओं ने ग्रामीण उन्नति को बढ़ावा दिया।

1911 में कुरुक्षेत्र में स्थापित गुरुकुल प्रणाली ने औपनिवेशिक संशयवाद के बावजूद शैक्षिक सुधार को आगे बढ़ाया। इसके विपरीत, पंडित दीन दयालु शर्मा (कस्तूरी, 2015) जैसे दिग्गजों के नेतृत्व में रुढ़िवादिता पर आधारित सनातन धर्म सभा, नाथू लाल, चंद्रभान और लाला सोहन लाल के नेतृत्व में भिवानी, हिसार और कुरुक्षेत्र जैसे इलाकों में फली-फूली। संस्कृत शिक्षा, नैतिक सुधार और गौवंश संरक्षण को बढ़ावा देते हुए, इसने आर्य समाज की कट्टरता का विरोध किया और सामूहिक रूप से एक गतिशील, बहु-धार्मिक सुधारवादी माहौल तैयार किया जिसने औपनिवेशिक और मिशनरी प्रभावों का प्रतिरोध किया।

19वीं सदी के हरियाणा में आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के सामाजिक-धार्मिक सुधार पहलों पर जनसंचार माध्यमों द्वारा प्रकाशित प्रतिक्रियाएँ

19वीं सदी के हरियाणा में, क्षेत्रीय पत्रकारिता ने हिंदू सामाजिक-धार्मिक सुधारों को प्रेरित किया। आर्य समाज ने हरियाणा पंच, खैर संदेश और जैन प्रकाश (गुप्ता, मुरलीधर) जैसे प्रकाशनों के माध्यम से वैदिक तर्कवाद, शिक्षा और शुद्धि की वकालत की, जबकि सनातन धर्म सभा ने सनातन धर्म (अंबाला) जैसी ब्राह्मणवादी पत्रिकाओं के माध्यम से

इसका विरोध किया। लाला लाजपत राय से प्रेरित जाट गजट और अहीर पत्रिका जैसे जाति-केंद्रित प्रकाशनों ने निम्नवर्गीय सुधारों को बढ़ावा दिया और हिंदू राष्ट्रवादी उत्साह को मजबूत किया।

नीचे दी गई तालिका उन महत्वपूर्ण समाचार पत्रों और जनसंचार माध्यमों की सूची देती है, जिन्होंने 19वीं शताब्दी के हरियाणा के सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों, विशेष रूप से आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के नेतृत्व में, को उल्लेख और विवरित किया और उन पर टिप्पणी की (अभिनव 7–9, 2024):

प्रकाशन का नाम	उत्पत्ति का वर्ष और स्थान	संबद्धता/विचारधारा	प्रमुख व्यक्तित्व	मूल विशेषता
हरियाणा पंच	1884, अंबाला	राष्ट्रवादीय सुधारवादी	बाबू बालमुकुंद गुप्ता	ब्रिटिश शासन की आलोचना, व्यंग्य, हिंदू पहचान, सामाजिक सुधार
जैन प्रकाश	1890 के दशक में, मेरठ/अंबाला (हरियाणा में प्रसारित)	सुधारवादी हिंदू (गैर-सांप्रदायिक)	विभिन्न आर्य-प्रभावित संपादकों	सामाजिक सुधार, धार्मिक पुनरुत्थान, अंधविश्वास विरोधी
खैर संदेश	19वीं सदी के अंत में, अंबाला	हिंदू सुधारवादीय राष्ट्रवादी	बाबू मुरलीधर	स्थानीय राजनीति, हिंदू शिक्षा, जाति और सामाजिक उत्थान
आर्य पत्रिका	1890 के दशक, लाहौर	आर्य समाज	लाला मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द)	वैदिक पुनरुत्थानवाद, शुद्धि, शिक्षा, मूर्तिपूजा-विरोधी, उपनिवेशवाद-विरोधी
जाट गजट	1916 (1890 के दशक की शुरुआत की पहल), रोहतक	जाति-केंद्रित हिंदू सुधार	छोटू राम (पूर्ववर्ती सुधारवादी प्रेस से प्रेरित)	किसान अधिकार, हिंदू कृषि पहचान, उपनिवेश-विरोधी ग्रामीण विमर्श
अहीर पत्रिका	20वीं सदी के प्रारंभ में (1890 के दशक के जाति-आधारित प्रेस से प्रभावित), रेवाड़ी	हिंदू जाति-आवाज	स्थानीय अहीर नेताओं	सामाजिक न्याय, जाति उत्थान, हिंदू एकता
सनातन धर्म	1943, अंबाला (अनौपचारिक परिपत्रों से प्रभावित)	रूढ़िवादी हिंदू (सनातन धर्म सभा)	स्वामी ज्ञानानंद, स्थानीय ब्राह्मण विद्वान	कर्मकांड, जाति, धार्मिक रूढ़िवादिता, गौरक्षा की रक्षा
वैदिक पत्रिका (वेदोदय)	1890 के दशक, लाहौर/अंबाला	आर्य समाज गुरुकुल परंपरा	महात्मा हंसराज, गुरुकुल कांगड़ी विद्वान	वैदिक शिक्षा, नैतिक सुधार, पुनरुत्थानवादी पवित्रता, सांस्कृतिक गौरव
हिंदू पत्रिका	19वीं सदी के अंत में, लाहौर (पंजाब और हरियाणा में प्रसारित)	सामान्य हिंदू सुधारवादी	एकाधिक योगदानकर्ता	हिंदू एकता, मंदिर प्रवेश, गौरक्षा, धार्मिक कानून, धर्मांतरण विरोधी प्रयास
भारत धर्म	1890 के दशक, बनारस/लाहौर अध्याय	सनातन धर्म महामंडल	पंडित मदन मोहन मालवीय (प्रभाव), दीन दयालु शर्मा (झज्जर)	हिंदू कानून, ब्राह्मणवादी व्यवस्था, धर्मग्रंथों का बचाव, सुधारवादी हमलों का जवाब

आर्य समाज और सनातन धर्म सभा द्वारा आयोजित हिंदू सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों के प्रसार, प्रचार और आलोचनात्मक टिप्पणी में क्षेत्रीय समाचार पत्र और पत्रकारिता साहित्य की भूमिका और वृद्धि पर अधिक स्पष्टता और जीवंतता प्रदान करते हुए, जिसे 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासित भारत में हिंदू राष्ट्रवाद के विकास के उत्प्रेरक के रूप में भी देखा जाता है, वास्तविक अंशों और सामाजिक-राजनीतिक और नृवंशविज्ञान के दृष्टिकोण से उनकी व्याख्या पर कुछ विश्लेषण नीचे प्रस्तुत किया गया है:

आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के नेताओं द्वारा प्रेस और मास मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग:

परिदृश्य 1:

स्वदेशी वास्तु प्रचारिका (1894–1898), स्वदेशी वास्तु प्रचारिणी सभा का प्रकाशन, आर्य समाज से प्रेरित आर्थिक राष्ट्रवाद का समर्थन करता था, औपनिवेशिक वाणिज्य और शिक्षा की आलोचना करता था, और स्वदेशी का समर्थन करता था, जिसके बाद लाला लाजपत राय की राष्ट्रवादी मीडिया पहल का समर्थन किया गया (राज, 2019)।

लाजपत राय ने लिखा:

"अपनी बात करूँ तो, मैं एक पूर्ण स्वदेशीवादी हूँ और पिछले पच्चीस वर्षों से हूँ, बल्कि तब से जब से मैंने पहली बार देशभक्ति शब्द का सही अर्थ समझा है। मैं इसे एक ऐसा उपाय मानता हूँ जिसके सही और निरंतर प्रयोग पर ही हमारे देश के कष्टों का निवारण निर्भर करता है। मैं इसे अपने देश का उद्धार मानता हूँ। स्वदेशी हमें स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर, स्वावलंबी, त्यागी और अंततः पुरुषार्थी बनाए। स्वदेशी हमें सिखाए कि हम अपनी पूँजी, अपने संसाधनों, अपने श्रम, अपनी ऊर्जा और अपनी प्रतिभा को सभी भारतीयों के हित में कैसे व्यवस्थित करें, चाहे उनका धर्म, रंग या जाति कुछ भी हो। यह हमें, हमारे धार्मिक और सांप्रदायिक मतभेदों के बावजूद, एकजुट करे।" (राज, 2019)

स्वदेशी को एक नैतिक दायित्व के रूप में पुनर्परिभाषित किया गया, जिसमें विक्टोरियन अनुशासन और पुरुषत्व को एकीकृत कर स्वदेशी नागरिक पहचान को विकसित किया गया तथा प्रभावशाली राष्ट्रवादी पत्रकारिता के माध्यम से देशभक्ति को प्रेरित किया गया।

परिदृश्य 2:

1916 में, रोहतक से प्रकाशित उर्दू साप्ताहिक पत्रिका जाट गजट जिसका निर्देशन चौधरी छोटू राम ने किया था और जिसे राय बहादुर चौधरी कन्हैयालाल ने वित्तपोषित किया था, ने किसानों की कठिनाइयों पर जोर देकर और औपनिवेशिक शोषण की निंदा करके हिंदू कृषि राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया। छोटू राम की चतुराईपूर्ण रचनाओं, जैसे *ठगगी के बाजार की सैर* और *गरीब जमींदार*, ने हिंदू सिद्धांतों को ग्रामीण अवज्ञा के साथ जोड़ा, विशेष रूप से पवित्र मोरों के शिकार के लिए ब्रिटिश कमांडर कर्नल इलिस्टर से सार्वजनिक रूप से माफी मांगने के लिए अपील किया। 1918 में, भीमसेन विद्यालंकार की *आर्य* ने आर्य समाज की एकता और उसके सुधारवादी संवाद को मजबूत किया (अभिनव, 2024)। सामूहिक रूप से, इन पत्रकारिता प्रयासों ने ग्रामीण जागरूकता को प्रेरित किया, हिंदू पहचान को

परिभाषित किया, और सामाजिक-आर्थिक शोषण और औपनिवेशिक अन्याय का विरोध करने के अवसर प्रदान किए, जिससे हरियाणा के हिंदू राष्ट्रवादी पुनरुत्थान में पत्रकारिता की भूमिका मजबूत हुई।

आर्य समाज और सनातन धर्म सभा पर बौद्धिक पत्रकारिता टिप्पणी:

परिदृश्य 1:

19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के प्रारंभ में, स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा 1875 में स्थापित आर्य समाज को प्रगतिशील और तर्कसंगत बताया गया, जैसा कि फार्कुहार की पुस्तक "मॉडर्न रिलीजियस मूवमेंट्स इन इंडिया" (1915) और "हिंदू पुनर्जागरण" पर प्रकाश डालने वाले अभिजात वर्ग के विमर्शों में स्पष्ट है (लुटगेनडॉर्फ, 1991)। भारती (1970) और जोन्स (1976) ने इस दृष्टिकोण को चुनौती दी और उपेक्षित जनसाधारण की आवाजों और भक्ति के स्वदेशी मूल के महत्व पर जोर दिया। इसके विपरीत, पंडित दीन दयाल शर्मा के नेतृत्व वाली सनातन धर्म सभा को रूढ़िवादी माना जाता था (बेली, 1983)। फिर भी, श्रद्धा राम के पर्चे जैसे स्थानीय स्रोत, निरंतर कर्मकांड, जाति और भक्ति प्रथाओं को प्रदर्शित करते हैं, जो सुधारवादी विमर्श के भीतर निरंतरता का संकेत देते हैं।

परिदृश्य 2:

19वीं सदी के उत्तर-पश्चिम भारत में, आर्य समाज के सत्यार्थ प्रकाश (1875) ने ब्राह्मणवादी कर्मकांड, मूर्ति पूजा और जाति व्यवस्था का विरोध किया, जिस पर भारतेन्दु हरिश्चंद्र (काशी धर्म सभा) जैसे परंपरावादियों की प्रतिक्रियाएँ सामने आईं, जिन्होंने सनातन धर्म के रूढ़िवादी सिद्धांत का समर्थन किया (सिंह 5–10, 2011)। सैद्धांतिक असहमतियों के बावजूद, दोनों ताकतों ने स्थानीय भाषा साहित्य और हिंदी भाषा आंदोलन के माध्यम से हिंदू जातीय-राष्ट्रीय पहचान को बढ़ावा दिया, धर्म, भाषा और राजनीति को आपस में गुंथते हुए। पैम्फलेट और संपादकीय ने एक "नई सामाजिक कल्पना" को बढ़ावा दिया, जिसने प्रारंभिक राष्ट्रवादी विचारों को प्रभावित किया (जावोस, 2001)।

आर्य समाज और सनातन धर्म सभा पर 19वीं सदी के क्षेत्रीय प्रेस और सार्वजनिक मीडिया की प्रतिक्रियाएँ:

परिदृश्य 1:

1891 की पंजाब जनगणना रिपोर्ट में जनगणना अधीक्षक ने हिंदुओं के बीच स्व-पदनाम के रूप में सनातन-धर्मी शब्द के बढ़ते प्रचलन पर ध्यान दिया:

“इससे भी बड़ी संख्या में लोग सनातन-धर्मी के रूप में दर्ज किए गए थे, लेकिन मैंने उनके आंकड़ों को दस्तावेज में दर्ज करना अनावश्यक समझा। यह शब्द केवल 'पुराने स्कूल' के प्रति निष्ठा को दर्शाता है और आमतौर पर आर्य समाज के अनुयायियों के विपरीत प्रयोग किया जाता है।

लाहौर शहर में प्रारंभिक गणना के दौरान, मैंने देखा कि लगभग सभी व्यक्ति जो आर्य नहीं थे, उन्हें सनातन-धर्मी के रूप में वर्गीकृत किया गया था, जो हमारे 'संप्रदाय-स्तंभ' पर एक ऐसा दृष्टिकोण था जो इसके प्राथमिक महत्व को कमजोर कर देता था।"

19वीं सदी के अंत तक, सनातन धर्म आर्य समाज के सुधारवाद के विरोध में एक सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण पहचान के रूप में विकसित हो चुका था। शहरी अभिजात वर्ग ने क्लबों और समाजों के माध्यम से इसे औपचारिक रूप दिया, जबकि जनगणना के आंकड़ों ने इसकी व्यापक सार्वजनिक स्वीकृति की पुष्टि की, जो रूढ़िवादिता और ब्राह्मणवादी प्रभुत्व को बनाए रखने के एक संगठित प्रयास का संकेत देता है (अधीक्षक, 19वीं सदी)।

परिदृश्य 2:

18 मई 1889 को लाहौर के द ट्रिब्यून ने महा हिंदू समिति के पैम्फलेट की निंदा की और कहा कि इसमें आवश्यक धार्मिक और सामाजिक सुधारों की उपेक्षा की गई है, तथा इसे निरर्थक बताया, जबकि बॉम्बे के नेटिव ओपिनियन ने इस प्रयास का समर्थन किया था (जैवोस 92–95, 1997)।

संपादकीय में दावा किया गया था, *राष्ट्रीय कांग्रेस ऐसे प्रश्नों का समाधान नहीं कर सकती, न ही हिंदू, मुसलमान और ईसाई सामूहिक रूप से इन मुद्दों पर चर्चा कर सकते हैं... केवल एक हिंदू राष्ट्रीय कांग्रेस ही अस्तित्व का कारण प्रदान कर सकती है।*

वास्तव में, 19वीं शताब्दी के पंजाब और हरियाणा में, क्षेत्रीय प्रेस और सार्वजनिक मीडिया ने हिंदू सामाजिक-धार्मिक सुधार पर चर्चा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। स्वामी दयानंद सरस्वती के नेतृत्व में आर्य समाज ने वैदिक तर्कवाद, एकेश्वरवाद और सामाजिक सुधार का समर्थन किया, जिसका हरियाणा पंच, खैर संदेश और जैन प्रकाश जैसी स्थानीय पत्रिकाओं के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया (सिंह, 2010)।

इसके विपरीत, सनातन धर्म सभा ने रूढ़िवादिता, कर्मकांड और जाति प्रथा को प्राथमिकता दी, जिसका प्रचार झज्जर, रेवाड़ी और सनातन धर्म (अंबाला) में ब्राह्मणवादी प्रकाशनों के माध्यम से किया गया (जावोस, 2001)। जाट गजट और अहीर पत्रिका जैसे प्रकाशनों ने जाति-विशिष्ट सुधारों को व्यक्त किया, जबकि राष्ट्रवादी मीडिया ने सामाजिक सुधार को उपनिवेश-विरोधी संघर्ष से जोड़कर हिंदू भावनाओं को

एकीकृत किया (अभिनव, 2024)। द ट्रिब्यून जैसे प्रकाशनों ने अराजनीतिकृत अखिल-हिंदू पहलों की आलोचना की, आर्य समाज-शैली के संरचनात्मक सुधारों और शुद्धि अभियानों को बढ़ावा दिया, सुधारवादी और रूढ़िवादी दृष्टिकोणों के बीच तनाव को रेखांकित किया, और औपनिवेशिक हरियाणा में जन जागरूकता, सांप्रदायिक पहचान और सामाजिक-राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाने में प्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाया (सिंह, 2011; राज, 2019)।

निष्कर्ष और भविष्य का दायरा

इस शोध में 19वीं सदी के हरियाणा के दो प्रमुख हिंदू केंद्रित सामाजिक-धार्मिक सुधार संगठनों और आंदोलनों – आर्य समाज और सनातन धर्म सभा पर क्षेत्रीय प्रेस और जन मीडिया की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया है, जो सामाजिक-राजनीतिक और नृवंशविज्ञान परिवर्तनों की दिशा में मार्ग प्रशस्त करने के लिए मजबूत और प्रभावशाली स्थितियों का स्पष्ट निहितार्थ प्रस्तुत करता है।

सबसे पहले, निष्कर्षों के आधार पर, आइए इस अध्ययन में प्रस्तावित शोध प्रश्नों के उत्तर दें:

प्रश्न 1: क्या सामाजिक-धार्मिक सुधारों, अर्थात् आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के वास्तविक और मीडिया जनित खुलासों का तुलनात्मक दृष्टिकोण उनकी समकालीन प्रवृत्ति और विरासत को समझने में सहायता के लिए पर्याप्त, विशिष्ट और विश्वसनीय संसाधन प्रस्तुत करता है?

उत्तर: हाँ। गुणात्मक अध्ययन का तुलनात्मक विषयवस्तु विश्लेषण-आधारित दृष्टिकोण निश्चित रूप से महत्वपूर्ण, अद्वितीय और तथ्यात्मक संसाधन प्रदान करता है। मीडिया के संपर्क से जनधारणा, राजनीतिक आत्म-प्रतिनिधित्व और समकालीन विमर्श (जैसे, जनगणना में सनातनियों द्वारा "गैर-आर्य" के रूप में पहचान, या आर्य समाज द्वारा शुद्धि के लिए सार्वभौमिक धर्म का वर्णन) में विशिष्ट अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है, जिससे हरियाणा में उनके निरंतर आधुनिक रुझानों और विरासतों को समझने में आसानी होती है।

प्रश्न 2: दो सामाजिक-धार्मिक क्षेत्रीय सुधारों के बारे में जनसंचार माध्यमों पर आधारित जानकारी, उन वास्तविक ऐतिहासिक प्रभावों से किस प्रकार मेल खाती है या भिन्न है, जो प्रलेखित हैं और हरियाणा की क्षेत्रीय विरासत के एक भाग के रूप में अभी भी विद्यमान हैं?

उत्तर: जनसंचार माध्यमों के माध्यम से होने वाले खुलासे मुख्यतः दर्ज ऐतिहासिक प्रभावों से जुड़े होते हैं, जो वास्तविक सुधार आंदोलनों (जैसे, आर्य समाज का मूर्तिपूजा विरोध, सनातन धर्म की पारंपरिक वकालत) और उनके परिणामस्वरूप संस्थागत विरासतों (जैसे, शैक्षणिक संस्थान, सामाजिक संगठन) को प्रतिबिंबित करते हैं। फिर भी, वे पहचान निर्माण की जटिलताओं, विमर्श के सामरिक चरित्र, और बहुआयामी आंतरिक और बाह्य आलोचनाओं को उजागर करके भिन्नताओं को उजागर करते हैं, जिन्होंने इन आंदोलनों को ऐसे तरीकों से प्रभावित किया, जिन्हें केवल एक ऐतिहासिक आख्यान पूरी तरह से समाहित नहीं कर सकता।

शोध से पता चलता है कि 19वीं सदी के मीडिया ने आर्य समाज को प्रगतिशील, वैदिक सुधार, सामाजिक प्रगति और राष्ट्रवादी सिद्धांतों को बढ़ावा देने वाले के रूप में चित्रित किया, जबकि सनातन धर्म सभा ने उदारवादी सुधारों में भाग लेते हुए रूढ़िवादिता को बनाए रखा (सिंह, 2011; राज, 2019)। मीडिया कवरेज ने हरियाणा में हिंदू पहचान को प्रभावित किया, धर्म का राजनीतिकरण किया और हिंदी को एक भाषाई पहचान के रूप में उजागर किया, जिसका असर 1966 के पंजाब-हरियाणा विभाजन पर पड़ा (कादियान, 2021)। इन आंदोलनों की स्थायी शैक्षिक और सामाजिक विरासत सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों को आकार देने में पत्रकारिता के प्रभाव को दर्शाती है।

संदर्भ

1. डॉ. अभिनव, "हरियाणा में क्षेत्रीय प्रिंट मीडिया: एक विश्लेषण अध्ययन।" CASIRJ, खंड 15, संख्या 11, 2024, पृष्ठ 7–9। आईएसएसएन 2319–9202।
2. आर्या, अनुपमा। "हरियाणा में आर्य समाज और स्वतंत्रता आंदोलन।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्फॉर्मेटिव एंड फ्यूचरिस्टिक रिसर्च, खंड 3, अंक 8, 3 मई 2016, पृष्ठ 3130–3134। आईएसएसएन 2347–1697
3. बनर्जी, संदीप, और अत्रेयी मजूमदार। "ब्रिटिश उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद।" ऑक्सफोर्ड बिब्लियोग्राफीज, 21 फरवरी 2023, <https://doi.org/10.1093/obo/9780195399318-0269>.
4. भारद्वाज, सूरज भान। "हरियाणा में पहली सहस्राब्दी तक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की दिशाएँ।" रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज, खंड 9, अंक 1, 1 जनवरी 2018, पृष्ठ 325–325, <https://doi.org/10.5958/2321-5828.2018.00058.x>। 21 जुलाई 2025 को अभिगमित।
5. चहल, मनदीप। "ब्रिटिश दृष्टिकोण और नीतियों में आर्य समाज की भूमिका।" जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्चेस इन एलाइड एजुकेशन, खंड 10, अंक 19, जुलाई 2015, पृष्ठ 1–2। आईएसएसएन 2230–7540।
6. दानसालिया, संजय। धार्मिक पहचान का मिथक: पंजाब और उसका सामाजिक-धार्मिक भूभाग। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नॉवेल रिसर्च एंड डेवलपमेंट (आईजेएनआरडी), खंड 7, अंक 7, जुलाई 2022, पृष्ठ 1–2। आईएसएसएन 2456–4184।
7. गोकवी, अलियाहम्मद, और आशाकुमारी सिंह। उत्तर औपनिवेशिक भारत में हिंदी प्रिंट मीडिया की भूमिका और महत्व तथा भारत के स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटिश शासन में इसका योगदान: साहित्य समीक्षा का एक अवलोकन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (आईजेसीआरटी), खंड 13, अंक 3, मार्च 2025, आईजेसीआरटी2503242, पृष्ठ 1–2
8. गोल्ड, विलियम। "19वीं सदी के भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधार।" ऑक्सफोर्ड रिसर्च इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एशियन हिस्ट्री, 30 जनवरी 2020, <https://doi.org/10.1093/acrefore/9780190277727.013.382>. 10 मार्च 2024 को अभिगमित।
9. जाखड़, मोनिका। "हरियाणा में आर्य समाज की साक्षरता और विकास।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, खंड 3, अंक 7, 2017, पृष्ठ 261–264। आईएसएसएन प्रिंट 2394–7500, आईएसएसएन ऑनलाइन 2394–5869।
10. कादियान, अर्जुन सिंह। देवताओं की भूमि: हरियाणा की कहानी। रूपा पब्लिकेशंस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, 2021, पृष्ठ 155–170।
11. कस्तूरी, मालविका। साधु, संप्रदाय और हिंदू राष्ट्रवाद: बीसवीं सदी के आरंभ में दशनामी और श्री भारत धर्म महामंडल। एनएमएमएल सामयिक पत्र इतिहास और समाज, नई श्रृंखला, संख्या 79, नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, 2015, पृष्ठ 22–30।
12. कौर, कर्मप्रीत और शुभदीप कौर। "पंजाब में प्रेस की उत्पत्ति: एक ऐतिहासिक अवलोकन।" सोशल रिसर्च फाउंडेशन, 25 अप्रैल 2025, DOI: 10-5281 मदवकव.15448225।
13. लाल, कंवर। "हरियाणा के संदर्भ में सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों पर एक अध्ययन।" एरो इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल, खंड 14, अंक 3, दिसंबर 2018। आईएसएसएन 2320–3714। यूजीसी अनुमोदन संख्या 63012।
14. लुबिन, टिमोथी। "हिंदू धर्म और कानून।" भारत में हिंदू धर्म: आधुनिक और समकालीन आंदोलन, विल स्वीटमैन और आदित्य मलिक द्वारा संपादित, सेज पब्लिकेशंस, 2016, पृ. 7–16।

15. लुटगेंडोर्फ, फिलिप. एक पाठ का जीवन: तुलसीदास के रामचरितमानस का प्रदर्शन. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1991. <http://ark.cdlib.org/ark:/13030/ft796nb4pk/>
16. मुमताज, डॉ. "हिंदी पत्रकारिता: सामाजिक-राजनीतिक जागृति (1868-1900 ई.)।" जेनिथ इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, खंड 2, अंक 6, जून 2012, पृ. 1-2। आईएसएसएन 2249-8834।
17. प्रकाश, रवि। "स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनमत निर्माण में प्रेस की भूमिका।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (आईजेएफएमआर), खंड 6, अंक 6, नवंबर-दिसंबर 2024, पृष्ठ 1-2। ई-आईएसएसएन 2582-2160।
18. प्रायर, कैथरीन। उत्तर भारत में हिंदू धर्म का ब्रिटिश प्रशासन, 1780-1900। पीएचडी शोध प्रबंध, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, सेंट कैथरीन कॉलेज, 1990, पृष्ठ 30-40।
19. राज, ऋचा। स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और स्वयं सहायता: औपनिवेशिक पंजाब में आर्य समाज का एक अध्ययन, 1890-1920 का दशक। मूविंग द सोशल, खंड 62, 15 अक्टूबर 2019, पृष्ठ 51-72, <https://doi.org/10.13154/mts.62.2019.51-72>। 21 जुलाई 2025 को अभिगमित।
20. सिंह, भजन। "हरियाणा में भारतीय राष्ट्रवाद का उदय (1900-1919)।" पूर्व मीमांसा: एक बहु-विषयक द्विवार्षिक शोध पत्रिका, खंड 9, अंक 1-2, मार्च-सितंबर 2018, पृष्ठ 1-8। आईएसएसएन: 0976-0237।
21. सिंह, मोहिंदर। "सुधारवादी युग में धार्मिक आलोचना, सार्वजनिक तर्क और प्रभाव: प्रारंभिक आर्य समाज और धार्मिक विवाद।" आईजीएसएफ: जर्नल ऑफ इस्लामिक स्टडीज एंड एंथ्रोपोलॉजी, अंक 07, जुलाई 2022, पृ. 1-2।
22. सिंह, मोहिंदर. 19वीं शताब्दी के उत्तर भारत में सामाजिकता की अवधारणा: हिंदी में समाज की अवधारणा पर विचार. 2011.
23. सिंह, संगत। इतिहास में सिख। नोएल क्यू किंग द्वारा लिखित, इतिहास और तुलनात्मक धर्म के एमेरिटस प्रोफेसर, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सांता क्रूज, 2010, पृष्ठ 150-155।
24. स्वास. हरियाणा चौप्टर - इतिहास, सुरक्षित, स्केलेबल और सुगम्य वेबसाइट, 2020, पृष्ठ 1-10, 232-252.
25. तबरेज अहमद नेयाजी। "सांस्कृतिक साम्राज्यवाद या स्थानीय आधुनिकता? वैश्वीकरण के दौर में हिंदी समाचार पत्र।" मीडिया, संस्कृति और समाज, खंड 32, अंक 6, नवंबर 2010, पृष्ठ 907-924, <https://doi.org/10.1177/0163443710379664>. 30 नवंबर 2020 को अभिगमित।
26. यादव, रेखा। औपनिवेशिक हरियाणा में लोकप्रिय धार्मिक परंपराएँ, ब्रिटिश सैन्य भर्ती और पुरुषत्व का सामाजिक निर्माण। अतीत और वर्तमान: आधुनिक भारत में प्रतिनिधित्व, विरासत और आध्यात्मिकता, खंड 4, अंक विशेषांक, 25 दिसंबर 2021, पृष्ठ 31-39, <https://doi.org/10.12944/crjssh.4.special-issue.04>. चमबपंस-पेनम.04। 2 जनवरी 2022 को अभिगमित।
27. यादव, सरिता। "हरियाणा में 19वीं सदी के उत्तरार्ध में महिला शिक्षा: एक आकलन।" इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमन रिसोर्सेज एंड सोशल साइंसेज, खंड 6, अंक 1, जनवरी 2019, पृष्ठ 151। आईएसएसएन (ऑनलाइन): 2349-4085, आईएसएसएन (प्रिंट): 2394-4218।
28. जावोस, जॉन। संगठन - औपनिवेशिक भारत में एक हिंदू आदर्श की खोज: हिंदू राष्ट्रवाद के उदय में संगठन का विचार 1870-1930। पीएचडी थीसिस, ब्रिस्टल विश्वविद्यालय, 1997।